क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

क्रियायोग शिविर में शास्त्रों की अलौकिक व्याख्या

अपने अंदर कूटस्थ शक्ति हृदय क्षेत्र है

शास्त्रों में जिस हृदय का वर्णन है वह सीने के अंदर का हार्ट नहीं है । मानव स्वरूप में सिर के पिछले भाग में मेडुला के अंदर विद्यमान सूक्ष्म अलौकिक शक्ति जिसे कूटस्थ कहा गया है, हृदय क्षेत्र है । क्रियायोग साधना के द्वारा हृदय क्षेत्र (कूटस्थ शक्ति) से मिलन होते ही सर्वव्यापकता की अनुभूति हो जाती है और साधक अनुभव कर लेता है कि उसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाहित है और वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में समाहित है । इसी सत्य को यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे के रूप में वर्णित किया गया है । – स्वामी श्री योगी सत्यम्

25 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने शास्त्रों की अलौकिक आध्यात्मिक व्याख्या करते हुए क्रियायोग का विधिवत अभ्यास कराया । उन्होंने स्पष्ट किया कि परमात्मा में भक्ति उच्चतम औषधि है जिसे ग्रहण करने पर सम्पूर्ण दैहिक, दैविक, भौतिक कष्टों का समापन हो जाता है । परमात्मा में भक्ति का अभिप्राय है सच की खोज । सच क्या है ? को स्पष्ट करते हुए स्वामी जी ने आगे कहा कि सच का वर्णन करते हुए श्रीमद्भगवदगीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने स्पष्ट किया है कि मैं सबमें हूँ और सब मुझमें हैं । जिस प्रकार एक बीज में अनन्त वृक्ष और वृक्ष अनन्त बीज समाहित है ठीक उसी प्रकार परमात्मा और ब्रह्माण्ड का संबंध है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने आगे कहा कि योगेश्वर श्रीकृष्ण ने स्पष्ट किया है कि मैं सबके हृदय में निवास करता हूँ । शास्त्रों में वर्णित हृदय सीने के अंदर का हार्ट नहीं है । शास्त्रों में जिस हृदय की चर्चा है वह सिर के पिछले भाग में स्थित मेडुला के अंदर दिव्य शक्ति केन्द्र है जिसे कूटस्थ केन्द्र कहा गया है । कूटस्थ के द्वारा भौतिक, सूक्ष्म और कारण जगत का सृजन हुआ है । कूटस्थ शक्ति दृश्य-अदृश्य, साकार-निराकार, माया-ब्रह्म आदि अनेक रूपों में प्रकाशित है । क्रियायोग साधना के द्वारा कूटस्थ शक्ति से एकता स्थापित होने पर साधक अपने और परब्रह्म के बीच दूरी की शून्यता का अनुभव कर लेता है । ऐसी अवस्था में अन्तःकरण में सम्पूर्ण परमात्म शक्तियों और गुणों का प्रकाशन हो जाता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने आगे कहा कि क्रियायोग साधना के द्वारा कूटस्थ शक्ति से एकाकार होने पर अनुभव हो जाता है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड हमारे अंदर समाहित है और हम ब्रह्माण्ड के प्रत्येक विन्दु पर उपस्थित हैं । इसी सत्य का वर्णन करते हुए आत्मसाक्षात्कारी ऋषियों ने कहा है यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे । ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाएँ दिव्य पिण्ड हैं जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की उपस्थिति है । आँखों से देखने पर लगता है कि हम ब्रह्माण्ड के किसी एक स्थान पर बैठे हैं तथा अन्य जगहों पर नहीं हैं । यह सीमित दृष्टि है तथा इसे ही असत, अज्ञान, माया की अनुभूति कहा गया है । क्रियायोग की साधना से अतीन्द्रिय दृष्टि (विवेक दृष्टि) प्रकाशित हो जाती है जिससे साधक अपनी उपस्थिति ब्रह्माण्ड के प्रत्येक विन्दु पर अनुभव कर लेता है। स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने कहा कि क्रियायोग साधना के द्वारा हृदय क्षेत्र (कूटस्थ शक्ति) से मिलन होते ही सर्वव्यापकता की अनुभूति हो जाती है तथा सम्पूर्ण सीमित भावों का लोप हो जाता है । कूटस्थ मोक्ष का द्वार है । कूटस्थ शक्ति से मिलन ही उच्चतम यज्ञ है, तप है, साधना है, भक्ति है ।

क्रियायोग सत्संग शिविर के पण्डाल में भारत, कनॉडा, अमरीका, पोलैण्ड, ब्राजील, रूस, गयाना, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, फिनीलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक, चिकित्सक, इंजीनियर और अन्य प्रबुद्ध वर्गों के साथ ही साथ कल्पवासी, तीर्थयात्री और विद्यार्थी भारी संख्या में भाग ले रहे हैं। क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक और रात्रि 11:00 बजे से 1:00 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बड़े ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

— योगमाता